# सोमनाथ स्वाभिमान पर्व

अटूट आस्था की
गौरव गाथा

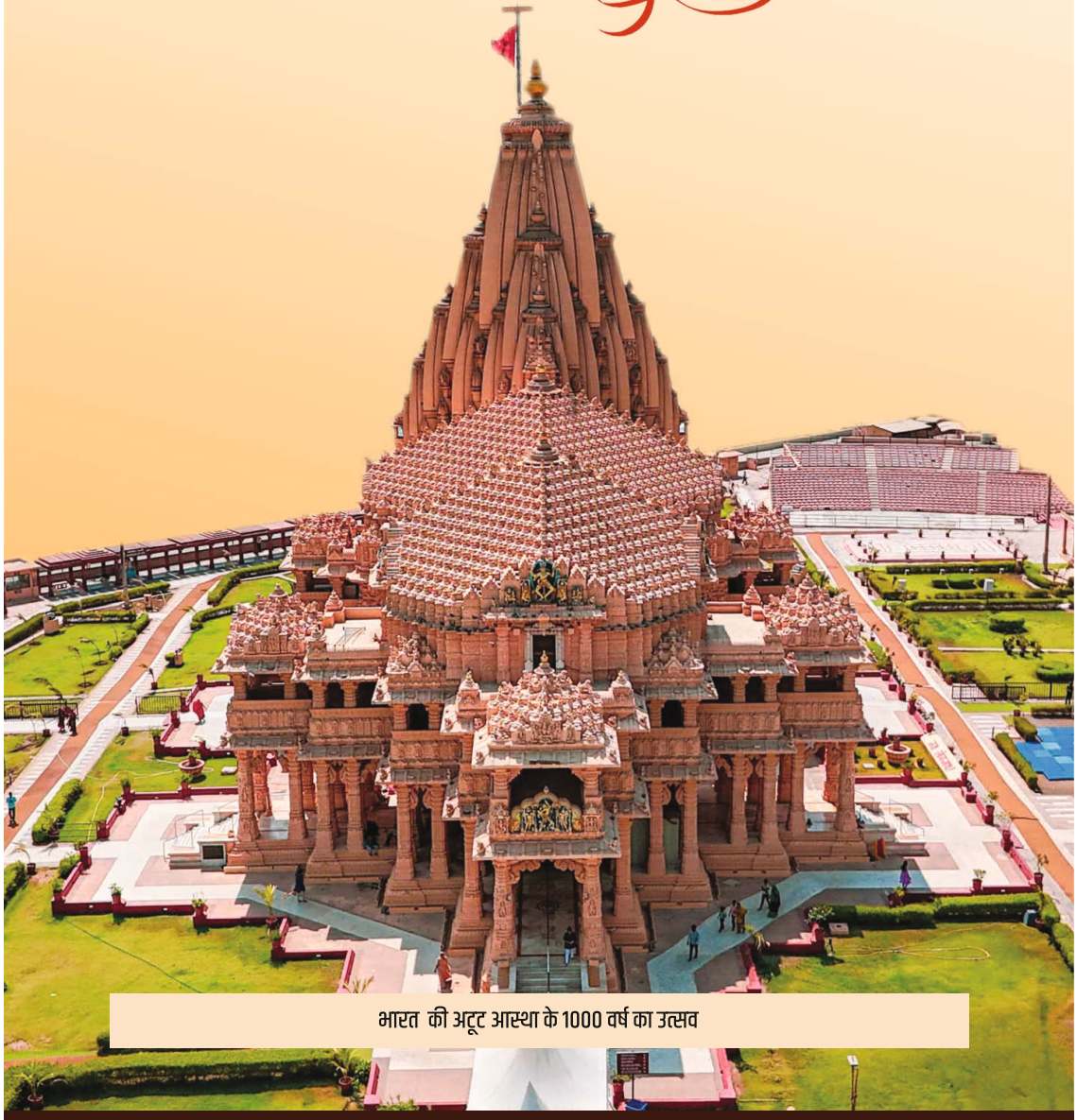

भारत की अटूट आस्था के 1000 वर्ष का उत्सव

सोमनाथ
स्वाभिमान पर्व
अटूट आस्था की
गौरव गाथा

**॥ ॐ नमः शिवाय ॥**

*मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः।*
*आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥ 14॥*

(हे कुन्तीपुत्र! शीत और उष्ण, सुख और दुःख के अनुभव इन्द्रियों के विषयों के संपर्क से उत्पन्न होते हैं। वे आते-जाते रहते हैं और अस्थायी होते हैं; इसलिए, हे भारत! उन्हें धैर्य और स्थिरता के साथ सहन करो।)

- श्रीमद्भगवद्गीता 2.14

यह श्लोक भारतीय आस्था और उसकी निरंतर यात्रा को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। समय के थपेड़ों को सहते हुए, सोमनाथ मंदिर ने सृजन और विनाश, श्रद्धा और विघटन, तथा पीड़ा और पुनर्स्थापन के अनगिनत चक्र देखे हैं । इन सबके बावजूद, सोमनाथ और भारत की आत्मा अडिग बनी रही। इसका मूल कारण रही 'तितिक्षा': वह क्षमता जिसके बल पर आघात सहते हुए भी संतुलन बनाए रखा जाता है, मूल्यों से समझौता किए बिना फिर से उठ खड़ा हुआ जाता है, और बीती कटुता में उलझे बिना भी स्मृति को जीवंत रखा जाता है।

आज जिस सहस्राब्दी का हम स्मरण कर रहे हैं, वह इसी संयम और अडिग आस्था का प्रमाण है। जैसे श्रीमद्भगवद्गीता क्षणिक सुख-दुःख से ऊपर उठने का संदेश देती है, वैसे ही सोमनाथ का इतिहास बताता है कि भारत की दिशा अदम्य सहनशीलता, नए सिरे से उठ खड़े होने और गरिमा के साथ आगे बढ़ने के साहस से तय हुई है। इसी भावना से आज हम एक साथ आ रहे हैं, विनाश को याद करने के लिए नहीं, बल्कि सहनशीलता का सम्मान करने और भारत की आस्था की निरंतरता का उत्सव मनाने के लिए।

**पवित्र स्मृति में सोमनाथ: प्रथम ज्योतिर्लिंग**

प्रभासं च परिक्रम्य पृथिवीक्रमसम्भवम् ।
फलं प्राप्नोति शुद्धात्मा मृतः स्वर्गे महीयते ॥
सोमलिङ्गं नरो दृष्ट्वा सर्वपापात्प्रमुच्यते ।
लब्ध्वा फलं मनोऽभीष्टं मृतः स्वर्गं समीयते ॥
यद्यत्फलं समुद्दिश्य कुरुते तीर्थमुत्तमम् ।
तत्तत्फलमवाप्नोति सर्वथा नात्र संशयः ॥

(जो प्रभास क्षेत्र की परिक्रमा करता है, वह सृष्टि-काल से पवित्र इस तीर्थ का पुण्य फल प्राप्त करता है; शुद्धात्मा होकर मृत्यु के पश्चात स्वर्ग में सम्मान पाता है। जो सोमलिङ्ग के दर्शन करता है, वह समस्त पापों से मुक्त होकर अभीष्ट फल प्राप्त करता है और अंततः स्वर्ग को प्राप्त होता है। इस उत्तम तीर्थ में श्रद्धा सहित जिस फल की कामना करके कर्म किया जाता है, वह फल निश्चय ही प्राप्त होता है - इसमें कोई संशय नहीं है।)

- (शिवपुराण - कोटिरुद्रसंहिता 14, श्लोक 56-58)

सोमनाथ- अर्थात सोम (चन्द्रमा) के स्वामी- सौराष्ट्र के दक्षिणी तट पर स्थित प्रभास क्षेत्र में विराजमान हैं, जिसे प्राचीन काल से पवित्र माना गया है। परंपरा के अनुसार सोमनाथ बारह ज्योतिर्लिंगों में प्रथम है। यह स्थल वेरावल, सोमनाथ पाटन, प्रभास तथा प्रभास पाटन जैसे नामों से जाना जाता है।

प्रभास पाटन प्राचीन काल से एक पवित्र स्थल रहा है। यह वह दुर्लभ भू-दृश्य है जहाँ एक ओर भगवान शिव 'सोमनाथ' के रूप में पूजे जाते हैं, वहीं दूसरी ओर यह भूमि भगवान श्रीकृष्ण की 'निजधाम-प्रस्थान लीला' से जुड़ी हुई है। यह स्थल शैव और वैष्णव परंपराओं के एक दुर्लभसंगम का प्रतिनिधित्व करता है, जो भारतीय सभ्यता की बहुलता, बहुस्तरीयता और समावेशी प्रकृति को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, प्रजापति दक्ष के शाप के कारण जब चन्द्रदेव का तेज क्षीण होने लगा, तो समय और जीवन की गति पर संकट आ गया। इस शाप से मुक्ति पाने के लिए चन्द्रदेव ने प्रभास क्षेत्र में तपस्या की। उन्होंने सरस्वती नदी और समुद्र के पवित्र संगम में स्नान किया और निरंतर भगवान महादेव की आराधना की।

चन्द्रमा की इस भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें पुनः तेज प्रदान किया और घटने-बढ़ने का वह क्रम स्थापित किया, जो चन्द्रमास को संचालित करता है। अपने इसी अनुग्रह के कारण, भगवान शिव यहाँ 'सोमनाथ' के रूप में प्रतिष्ठित हुए और यह प्रभास क्षेत्र एक अत्यंत श्रेष्ठ तीर्थस्थल के रूप में मान्य हुआ।

*पुराणों के अनुसार सोमनाथ की उत्पत्ति*
*(स्रोत: द्वादश ज्योतिर्लिंग, गीता प्रेस, गोरखपुर)*

इन किंवदंतियों से आगे भी पुरातात्त्विक साक्ष्य और सांस्कृतिक परंपराएँ यह दर्शाती हैं कि इस क्षेत्र में शिव की उपासना भारत के आरंभिक काल से ही चली आ रही है।

**सोमनाथ: सहनशीलता और स्वाभिमान की परंपरा**

सदियों से, सोमनाथ आस्था और सत्ता के मिलन बिंदु पर स्थित रहा है। राजनीतिक उथल-पुथल और परिवर्तनों के कारण, मंदिर को कई बार तोड़ा या क्षतिग्रस्त किया गया। इसके बावजूद, हर विनाश के बाद, विभिन्न शासकों, समुदायों और भक्तों ने इसका पुनर्निर्माण किया। ये घटनाएँ केवल विनाश

की कहानी नहीं हैं, बल्कि उस निरंतरता को दर्शाती हैं, जहाँ पवित्र स्मृति भौतिक क्षति से कहीं अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुई।

ईस्वी 1025-26 का आक्रमण एक गहरा आघात था, लेकिन यह सोमनाथ के लोप का क्षण नहीं था। मंदिर ध्वस्त किया गया, फिर भी उसकी स्मृति अमर रही। प्रभास की तीर्थयात्रा कभी बाधित नहीं हुई, और सोमनाथ हमारी धार्मिक चेतना में निरंतर जीवंत बना रहा।

**वीर हमीरजी गोहिल: इतिहास से परे जीवित स्मृति**

सोमनाथ का इतिहास केवल राजाओं, साम्राज्यों और पुनर्निर्माणों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उन साहसिक कृत्यों से भी जीवंत हुआ है जिन्हें लोकस्मृति ने सहेज कर रखा है। वीर हमीरजी गोहिल ऐसे ही एक विस्मृत नायक हैं, जिनका अस्तित्व शाही इतिहास-ग्रंथों से अधिक क्षेत्रीय परंपराओं और सामूहिक चेतना में जीवित है।

मध्यकाल में सोमनाथ की रक्षा से जुड़ा उनका जीवन-संघर्ष 'राजधर्म' के उस उच्च आदर्श को दर्शाता है, जहाँ किसी पवित्र स्थल, समुदाय और सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा को सर्वोपरि माना जाता था। वे उन अनगिनत अज्ञात रक्षकों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनके बलिदानों के कारण, सोमनाथ की दीवारें ध्वस्त होने पर भी, उसकी चेतना और आस्था सदैव जीवित बनी रही।

**पुनर्स्थापन से उत्तरदायित्व तक: स्वतंत्र भारत का संकल्प**

स्वतंत्रता और विभाजन की उथल-पुथल के कुछ ही महीनों बाद, 12 नवम्बर 1947 को कार्तिक सुदी 1, दीपावली के दिन, सरदार वल्लभभाई पटेल ने सोमनाथ के दर्शन किए। इस ऐतिहासिक क्षण में उनके साथ नवानगर के जाम साहब श्री दिग्विजयसिंहजी जडेजा और के. एम. मुंशी सहित अन्य वरिष्ठ नेता उपस्थित थे। इसी अवसर पर यह महत्वपूर्ण संकल्प लिया गया कि सोमनाथ के प्राचीन मंदिर के पुनर्निर्माण का दायित्व स्वतंत्र भारत द्वारा उठाया जाएगा।

यह निर्णय केवल भावनात्मक नहीं था, बल्कि एक संगठित और संस्थागत जिम्मेदारी के रूप में उठाया गया कदम था। इस संकल्प को साकार करने के लिए एक सलाहकार समिति का गठन किया गया, एक ट्रस्ट की स्थापना हुई, और एक सुव्यवस्थित विधिक-प्रशासनिक ढाँचा विकसित किया गया। यह प्रक्रिया स्वतंत्रता-उपरांत भारत की उस दूरदर्शिता को दर्शाती है जिसमें आस्था और विरासत का संरक्षण संवैधानिक, पारदर्शी और उत्तरदायी माध्यमों से सुनिश्चित किया जाना था।

11 मई 1951 को प्रातः 9:47 बजे राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की उपस्थिति में सम्पन्न प्राण-प्रतिष्ठा समारोह ने यह स्पष्ट किया कि सोमनाथ किसी एक क्षेत्र या संप्रदाय का नहीं, बल्कि राष्ट्र की साझा सांस्कृतिक स्मृति का अंग है। इस समारोह ने प्रतिपादित किया कि सोमनाथ की विरासत की रक्षा करने का अर्थ अतीत में लौटना नहीं, बल्कि राष्ट्र के भविष्य के प्रति एक गंभीर दायित्व का पालन है।

**सोमनाथ स्वाभिमान पर्व 2026: एक जीवित विरासत, एक जीवंत तीर्थ**

8 से 11 जनवरी 2026 से शुरू हुआ सोमनाथ स्वाभिमान पर्व भारत की सभ्यतागत यात्रा के दो महत्वपूर्ण पड़ावों का स्मरण कराता है- ईस्वी 1026 में हुए आक्रमण के एक हजार वर्ष तथा स्वतंत्रता के पश्चात 1951 में पुनर्निर्मित मंदिर के पुनः उद्घाटन के पचहत्तर वर्ष। यह पर्व अक्षय आस्था, नवीकरण और संस्कृति के स्वाभिमान की पुष्टि है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, जो श्री सोमनाथ ट्रस्ट के अध्यक्ष भी हैं, के नेतृत्व में सोमनाथ अब समग्र पुनरुत्थान के एक नए चरण में प्रवेश कर चुका है। मंदिर को एक सशक्त और जीवंत आध्यात्मिक केंद्र बनाने के लिए प्रशासनिक सुधार, बुनियादी ढांचे का सुदृढ़ीकरण, विरासत का संरक्षण और सांस्कृतिक पहलें की गई हैं। ये पहलें, जिनमें निरंतरता और समावेशन पर भी जोर दिया गया है, इस बात का प्रमाण हैं कि हमारे सभ्यतागत मूल्य समकालीन उत्तरदायित्व के रूप में अभिव्यक्त हो रहे हैं।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और शैक्षिक गतिविधियों के द्वारा समाज को उसकी गहरी विरासत से पुन: परिचित कराता है। सोमनाथ अब केवल एक पुनर्स्थापित मंदिर ही नहीं, बल्कि एक जीवंत तीर्थ के रूप में स्थापित है, जो मूल्यों, स्मृति और उत्तरदायित्व की निरंतर धारा का प्रतीक है।

**जय सोमनाथ!**

**मंदिर उपासना, पवित्र भूगोल एवं तीर्थयात्री सुविधाएँ**

**दर्शन एवं पूजा के शुभ समय**

- **प्रातःकाल:** *प्रातः 7:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक* - अभिषेक, बिल्व पूजा एवं रुद्राभिषेक के लिए विशेष रूप से शुभ
- **सायंकाल:** *सायं 4:00 बजे से 7:00 बजे तक* - संध्या पूजा और दीप-दर्शन के लिए सर्वोत्तम समय, जब मंदिर क्षितिज पर समुद्र में डूबते सूरज के साथ एकाकार हो जाता है।

**सोमनाथ के प्रमुख पर्व**

- **महाशिवरात्रि -** भगवान शिव से संबंधित वर्ष की सर्वाधिक पावन रात्रि, जिसमें रात्रि भर चलने वाली पूजा के लिए लाखों श्रद्धालु आते हैं
- **कार्तिक मेला -** कार्तिक मास में तीर्थयात्रा और पवित्र स्नान से जुड़ा पर्व
- **जन्माष्टमी -** प्रभास क्षेत्र और समीपवर्ती भूभागों के साथ श्रीकृष्ण के संबंध का स्मरण

**प्रभास क्षेत्र के प्रमुख तीर्थ**

- **अग्निकुंड -** अनुष्ठानों से जुड़ा पवित्र अग्नि-तीर्थ
- **अहिल्याबाई होल्कर मंदिर -** सोमनाथ के ऐतिहासिक पुनरुद्धार से संबंधित
- **प्राची त्रिवेणी -** पितृ कर्म से जुड़ा संगम स्थल
- **यादवस्थली -** यादव वंश के अंतिम चरण से संबंधित स्थल
- **बाण तीर्थ -** तपस्या और पवित्र स्मृति से जुड़ा तीर्थ
- **भालका तीर्थ -** श्रीकृष्ण के देहोत्सर्ग का स्थल, उनके शाश्वत धाम में प्रस्थान का प्रतीक
- **प्रभास के अन्य प्राचीन मंदिर -** इस क्षेत्र की निरंतर पवित्र उपस्थिति को दर्शाते हैं

**निकटवर्ती महत्वपूर्ण तीर्थस्थल**

- **गोरखमणि -** नाथ योग परंपराओं से संबंधित
- **प्राची -** प्राचीन पवित्र नदी-मार्ग एवं अनुष्ठानिक क्षेत्र
- **मूल द्वारका -** श्रीकृष्ण परंपरा के प्रारंभिक चरण से जुड़ा स्थल
- **सूत्रपाड़ा -** तीर्थमार्गों से संबंधित ऐतिहासिक तटीय बस्ती
- **चेला सोमनाथ -** सोमनाथ के पवित्र भूगोल से जुड़ा क्षेत्रीय तीर्थ
- **द्वारका धाम -** चार धामों में से एक, जो भारत के पश्चिमी अक्ष को पूर्ण करता है

**आवागमन के साधन**

- **रेल:** वेरावल रेलवे स्टेशन निकटतम रेल केंद्र है
- **सड़क:** गुजरात के प्रमुख नगरों से राष्ट्रीय एवं राज्य राजमार्गों द्वारा सुगम संपर्क
- **वायु:** निकटतम हवाई अड्डे दीव और राजकोट में स्थित हैं, जहाँ से सड़क मार्ग द्वारा आगे की यात्रा संभव है

**ठहरने की सुविधाएँ**

- **सोमनाथ मंदिर ट्रस्ट की आवास व्यवस्था –** स्वच्छ, किफायती और तीर्थयात्रियों के लिए उपयुक्त सुविधाएँ
- **निकटवर्ती होटल एवं धर्मशालाएँ –** विभिन्न बजट और आवश्यकताओं के अनुरूप अनेक विकल्प

**सोमनाथ केवल एक स्थान नहीं, बल्कि एक पवित्र परिसर है, जहाँ दर्शन, स्नान, स्मृति और यात्रा मिलकर तीर्थ का पूर्ण अनुभव कराते हैं।**

# भगवान शिव से जुड़े प्रतीक और उनके अर्थ

**अर्धचन्द्र**
मन की शांति, समय की लय और पूर्ण सजगता के साथ आंतरिक उल्लास का प्रतीक।

**जटा**
तप, संयम और अपार आध्यात्मिक ऊर्जा को धारण करने की क्षमता का प्रतीक।

**गंगा**
पवित्रता, ज्ञान और करुणा की धारा, जो जीवन को शुद्ध करती है।

**त्रिनेत्र**
माया, द्वैत और इन्द्रिय की सीमाओं से परे जाकर सत्य को देखने वाली जागृत दृष्टि का प्रतीक।

**नाग**
कंठ स्थित विशुद्धि चक्र के माध्यम से शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विषैले प्रभावों पर नियंत्रण का प्रतीक।

**रुद्राक्ष**
वैराग्य, आध्यात्मिक अनुशासन और मानव चेतना का ब्रह्मांड से सामंजस्य दर्शाता है।

# भगवान शिव से जुड़े प्रतीक और उनके अर्थ

**भस्म**
शरीर की क्षणभंगुरता और नश्वर पर शाश्वत की विजय का प्रतीक।

**त्रिशूल**
अस्तित्व की तीन शक्तियों - सृष्टि, पालन और संहार- पर नियंत्रण तथा ऊर्जा के संतुलन (इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना) का संकेत।

**डमरू**
उस नाद का प्रतीक जिससे सृष्टि और भाषा का उद्भव होता है।

**व्याघ्रचर्म**
आदिम प्रवृत्तियों और वासनाओं पर विजय, तथा पशु स्वभाव पर नियंत्रण का प्रतीक।

**नंदी**
अडिग भक्ति, धैर्य और सजग ध्यान का प्रतीक-बिना किसी इच्छा या अपेक्षा के शांत प्रतीक्षा में लीन।

| ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

ॐ
नमः शिवाय

| ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

ॐ
नमः शिवाय

| ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

| ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

ॐ नमः शिवाय

| ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

| ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

ॐ नमः शिवाय

| ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

| ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

ॐ नमः शिवाय

| ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

ॐ
नमः शिवाय

| ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

ॐ नमः शिवाय

| ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

ॐ नमः शिवाय

| ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय | ॐ नमः शिवाय |
| --- | --- | --- | --- |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

ॐ
नमः शिवाय

# 12 ज्योतिर्लिंग

सोमनाथ

मल्लिकार्जुन

महाकालेश्वर

ओंकारेश्वर

केदारनाथ

भीमाशंकर

काशी विश्वनाथ

त्र्यंबकेश्वर

वैद्यनाथ

नागेश्वर

रामेश्वरम

घृष्णेश्वर

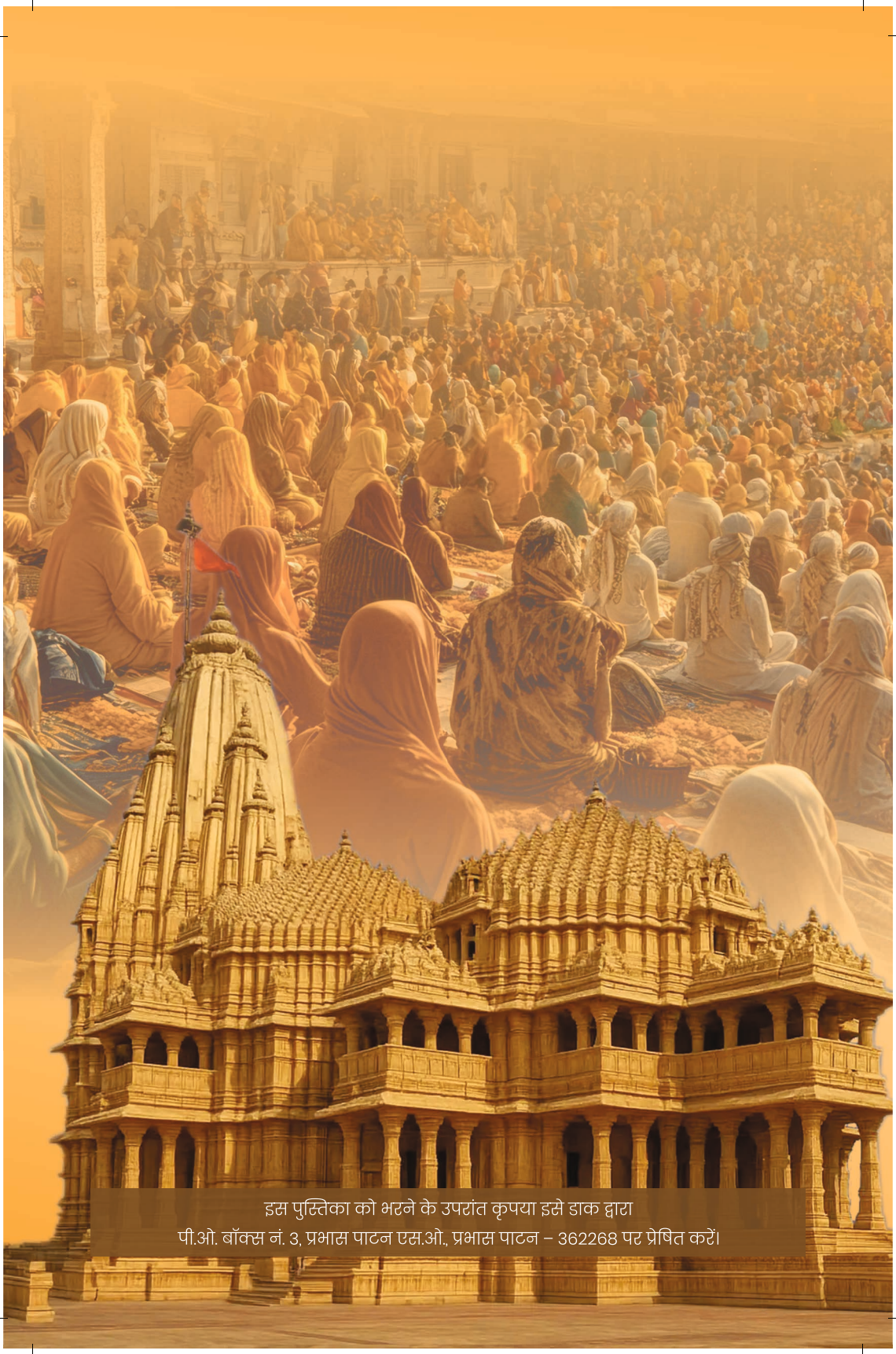

इस पुस्तिका को भरने के उपरांत कृपया इसे डाक द्वारा
पी.ओ. बॉक्स नं. 3, प्रभास पाटन एस.ओ., प्रभास पाटन – 362268 पर प्रेषित करें।